मेरी प्रिय कहानी

गुरु की पहचान ध्यान में

बड़ी पुरानी सूफी कहानी है। एक आदमी था एक सम्राट के साम्राज्य में, राजधानी में, वह कुछ भी करता, गलत हो जाता। कुछ भी करता, हानि हो जाती। दुर्भाग्य उसका पीछा करता। सम्राट ने एक फकीर को पूछा कि इस आदमी का मैं निरंतर अध्ययन करता रहा हूं, इसके हाथ में कभी सौभाग्य की घड़ी आती ही नहीं। क्या इसके माथे पर बिलकुल लिखा है कि यह दुख ही भोगेगा? उस फकीर ने कहा, पुरानी आदत है इसकी दुख भोगने की, जन्मों-जन्मों में यही इसने अर्जित किया है। सम्राट ने कहा, मेरा मन मानने का नहीं होता। मेरा तो मानने का मन यही होता है, ठीक परिस्थिति नहीं मिली, ठीक संग-साथ नहीं मिला, ठीक शिक्षण नहीं मिला, इसलिए यह आदमी भटक रहा है। उस फकीर ने कहा, तो प्रयोग करके देख लें।

तो एक दिन रास्ते पर सम्राट ने एक बहुत बड़े बर्तन में, स्वर्ण-पात्र में अशर्फियां, बहुमूल्य हीरे-जवाहरात भरकर रास्ते के किनारे रख दिए, जहां से वह आदमी रोज सांझ को निकलता था। वह एक पुल था नदी के ऊपर, उस पुल पर वह पात्र रख दिया गया। सब तरफ सचेत कर दिए गए, पुलिस का पहरा कर दिया गया कि कोई दूसरा आदमी इस पात्र को उठा न पाए। लेकिन अगर यह आदमी, जो अभागा है, यह अगर पात्र को उठाए, तो इस पर कोई रुकावट न डाली जाए, इसको पात्र उठा लेने दिया जाए। यह ले जाए पात्र को, यही इसका मालिक समझा जाए।

बड़ी अनूठी घटना घटी। फकीर और सम्राट दोनों पुल के दूसरी तरफ खड़े हुए प्रतीक्षा कर रहे हैं। वह आदमी पुल पर चला, सम्राट का हृदय जोर से धड़कने लगा, क्योंकि एक सिद्धांत का सवाल है। सम्राट सोचता है कि मनुष्य के पुरुषार्थ में सब कुछ है। और अब तो पुरुषार्थ के लिए भी करने को कुछ नहीं है, सिर्फ घड़ा रखा हुआ है भरा हुआ, स्वर्ण-पात्र सामने रखा है, वह उसके ठीक रास्ते में पड़ेगा, वह उसको उठा ले, कोई रोकने वाला नहीं है, समृद्धिशाली हो जाए, सदा की गरीबी मिट जाए। लेकिन जैसे-जैसे वह आदमी करीब आया, सम्राट हैरान हुआ, उस आदमी ने आंखें बंद कर रखी हैं! वह पात्र से आकर टकराया, अशर्फियां नीचे गिर गई, आवाज हुई, लेकिन वह आदमी पात्र से बचकर, आंख बंद किए पुल पार करने लगा।

जब वह उस पार पहुंचा, तो सम्राट नहीं रोक सका अपने को। उसने उसको पकड़ा और कहा कि मूढ़, आंख क्यों बंद किए है? उसने कहा, आज मुझे ऐसा खयाल आया कि क्या मैं आंख बंद करके भी पुल पार कर सकता हूं कि नहीं? सदा आंख खोलकर पार करता हूं, आज ऐसा विचार आया। और निश्चित ही मैं पार कर सकता हूं, सिर्फ एक जगह बीच में कहीं थोड़ा-सा किसी चीज से टकराया था, बाकी अगर अंधा भी हो जाऊं, तो भी मुझे अड़चन आने वाली नहीं है। उस फकीर ने कहा कि देखें।

बुद्ध तुम्हारे रास्ते में खड़े हों, तुम टकराकर निकल जाओगे। उस दिन तुम पक्का तय करोगे कि देखें, आंख बंद करके भी रास्ते से निकल सकते हैं कि नहीं।

इसलिए मैं कहता हूं कि चूक जाना आसान है। संभावना अति दुर्लभ है और चूक जाना बिलकुल आसान है। पर ये जो दोनों छोर हैं, विपरीत दिखाई पड़ने वाले, इन दोनों को अगर तुम ठीक से समझ लो, तो स्थिति बिलकुल उलटी हो जाती है। तब संभावनाओं को चूकना आसान नहीं है, और तब बुद्धत्व का साक्षात्कार भी इतना कठिन नहीं है। अगर तुम दोनों बातों को ठीक से समझ लो, तो तुम्हें शायद रोज भी मार्ग पर बुद्ध मिल सकते हैं। और एक बार भी तुम्हें मिल जाएं, तो तुम द्वार में प्रवेश कर जाओगे, उसे चूकने का कोई कारण नहीं है।

ध्यान के सारे प्रयोग मैं इसीलिए करवा रहा हूं, ताकि तुम्हारे लिए यह संभव हो जाए कि बुद्ध जब तुम्हें मिलें तो तुम पहचान लो, कि द्वार जब खुले तब तुम पीठ किए हुए न खड़े रहो, कि द्वार क्षणभर को भी खुले तो तुम उसके भीतर प्रवेश हो जाओ, तुम चूक न सको। ध्यान तुम्हें गुरु को पहचानने में सहाई होगा।

अब यह बड़ा मुश्किल है। क्योंकि आमतौर से हम ध्यान गुरु के पास सीखने जाते हैं। लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि तुम गुरु को ध्यान के बिना पहचान ही न पाओगे। तुम जाओगे कहां? ध्यान ही तुम्हें गुरु को पहचानने में समर्थ बनाएगा। तुम विचार से गुरु को पहचानने जाओगे, चूक जाओगे।

— ओशो
नहिं राम बिन ठांव